बहुत याद आता है ---

— राना ज़ैदी

DATE 13-10-2011

बहुत याद आता है मुझको
वो छोटे से मुहल्ले का बड़ा सा मेला
वो टूटे बाँध सा उमड़ा
विचित्र रोमांच से भरा
औरतो बच्चो बूढ़े, और जवानो का रेला

वो गर्द के ~~पर्दो~~ पर्दे में छिपता
अंदरसे की गोलियो
और पकोड़ियो का ~~ठेला~~ धुंधला सा ठेला
वो मामू की उँगली पे जकड़ी नन्ही हथेली
वो हाथों मे लटका खिलौनो का थैला

वो औरतो की चित्कार का आसमानी झूला
वो बच्चो की चिल्लम-चिल्ली ~~का~~ और
चकर चूँ का झूला
वो अनगिनत लाउडस्पीकरो की फूहड़ कतार
वो गीतों, क़व्वाली का उलझा झमेला

---- पर क्यों याद आता है मुझको ----

वो छोटे से मुहल्ले का बड़ा सा मेला
बहुत याद आता है मुझको वो छोटे से मुहल्ले का
बड़ा सा मेला --

राना ज़ैदी
वैशाली गाजियाबाद